## सम्पादक के नाम

# मैं उन लड़कियों में से हूं जो जरूरत पड़ने पर दौड़ा-दौड़ा के धो दें

**मु**झे मीडिया में काम करते चार साल से अधिक हो चुका है. इस इंडस्ट्री में मेरा कोई गॉडफादर नहीं है लेकिन किस्मत अच्छी है कि अब तक जिस भी कंपनी में काम किया है, वहां जॉब बस मुझे मिल गई, मांगने नहीं गई हूं.

मांगने ना जाने के पीछे वजह ये है कि मेरी जान पहचान नहीं है. कहाँ वेकेंसी है नहीं है, पता ही नहीं चलता है. अब जाकर कुछ दोस्त बने हैं. लल्लनटॉप की जॉब छोड़ने के बाद चार महीने तक बेरोजगार थी. इस दौरान जॉब के लिए खूब हाथ-पैर चलाया लेकिन जो नतीजा निकलकर सामने आया वो बेहद खराब था.

एक नामी वेबसाइट में सबकुछ फाइनल होने के बाद भी बात नहीं बनी लेकिन हां वहां के एडिटर को मैं इतनी क्यूट लगी कि उन्हें मेरे गाल खींचने का मन था और उन्होंने ये बात कह भी दी.

किसी ने जॉब की बात करने के लिए रूम का ऑफर किया तो किसी ने कुछ और लेकिन मैं भी एकदम क्लियर थी जॉब मिले ना मिले इन डबल फेस वालों के सामने झुकना नहीं है. और इसकी पहली वजह तो यही थी कि मेरे पैसे से मेरा घर खर्च नहीं चलता है और दूसरी वजह मुझे किसी के साथ सोना होगा तो अपनी शर्तों पे सोऊंगी ना कि जॉब के लिए. उस समय ही एक-एक का नाम लिखकर पोस्ट करना चाहती थी लेकिन नहीं किया. जो लिखना था खुद को लिखकर इनबॉक्स करती रही.

हां इन सबसे पहले मीडिया दरबार, बीबीसी- नेटवर्क 18 जैसी संस्थानों में काम करने वाले कुछ महानुभावों ने बहुत कोशिश की फ़्लर्ट करने की लेकिन उन्हें पता चल गया कि गलत जगह कोशिश कर रहे है तो अनफ्रेंड और ब्लॉक कर चलते बने (किसी का भी नाम इसलिए नहीं लिखूंगी क्योंकि मेरा रेस्पॉस देख उनलोगों दूरी बना ली). मीडिया दरबार वाले महान हस्ती ने तो पहली बातचीत में कहा था कि मीडिया में लड़कियों का टैलेंट नहीं देखा जाता बल्कि ये देखा जाता है कि उनकी सलवार कैसे उतारी जाए. अभी भी कुछ ऐसे नामी लोग हैं जो मजाक के नाम पे बकवास करने की कोशिश करते हैं और आप पलटकर जवाब दे दो तो इन्हें लगता है लड़की में बहुत ईगो है. मीडिया में 90 फीसदी अनुभव यही रहा है लेकिन दस फ़ीसदी की तारीफ में पोस्ट लिखी जा सकती है.

**- साइबर नजर**

# यह घटना सन् अट्ठासी से बानवे के बीच किसी बरस की है

**हाँ**, समय मुझे याद है । वह फरवरी के पहले हफ़्ते का कोई दिन था । तब ठंड हुआ करती थी, इतनी कि फरवरी की दोपहर की धूप गुनगुनी हुआ करती थी, तीखी नहीं । मुझे नौकरी में आए आठेक साल हो गए थे । राजकीय महाविद्यालय, बावल में बीस-बाईस लोग टीचिंग स्टाफ़ में थे । कम से कम पन्द्रह लोग मुझसे सीनियर रहे होंगे । ख़ैर, नोटिस आया कि उच्चतर शिक्षा विभाग, चंडीगढ़ से संयुक्त निदेशक श्री भल्लेराम वशिष्ठ दोपहर में स्टाफ़ की मीटिंग लेंगे । कॉलेज में एक छोटा सा घसियाला मैदान था । वहीं स्टाफ़ के लिए कुर्सियां लगी थीं । सामने दो कुर्सियों पर संयुक्त निदेशक और प्राचार्य विराजमान हो गये । संयुक्त निदेशक महोदय ने बोलना शुरू किया । क्रमशः उनका लहजा सख़्त और अपमानजनक होता गया ।

उन्होंने कुछ इस तरह स्टाफ़ को लताड़ना शुरू किया- आप लोग यहाँ गीता के श्लोक पढ़ने आते हो । आपको शर्म नहीं आती, ये लड़के मैदान में आवारा घूम रहे हैं । इनके लिए कोई खेल का इंतजाम नहीं, पढ़ाई नहीं । सरकार आपको हरामखोरी की तनख़्वाह देती है क्या? ये ग़रीब ग्रामीण बच्चे यहाँ किसलिए आते हैं? "इसी तरह के और भी कितने इल्ज़ाम। मेरी तरह निश्चित ही कई लोगों का ख़ून इन बेबुनियाद इल्ज़ामों के कारण खौल रहा होगा । एक तरफ तो हम कुछ स्टाफ़ सदस्य कुछ बहुत ग़रीब छात्रों की फीस, किताबों, कपड़ों, जूतों तक का खर्च उठा रहे हैं और उस पर बेईमानी और हरामखोरी का आरोप । पढ़ा तो पूरा ही स्टाफ़ ईमानदारी से रहा है । मुझे लगता, अभी कोई सीनियर सदस्य इनकी बातों का जवाब देगा । पर नहीं, सब सर झुकाए बैठे रहे । संयुक्त निदेशक महोदय ने जैसे ही अपनी वाणी को विराम दिया, मैं खड़ा हुआ । मैंने कहा-"सर,मैं कुछ कहना चाहता हूँ । आप जो चाहें, मुझे सज़ा दे लें, पर एक बार मेरी बात सुन लें । उन्होंने कहा-बोलो । मैंने कहा- आपको ग़रीब, ग्रामीण बच्चों की चिंता है, यह जानकर अच्छा लगा पर आपके द्वारा स्टाफ़ पर लगाए सभी आरोपों को मैं सिरे से न केवल नकारता हूँ, बल्कि आपके अपमानजनक लहजे के प्रति अपना विरोध भी दर्ज करवाता हूँ । बिना हक़ीक़त को जाने कोई राय बना लेना सही नहीं है।""तो फिर हक़ीक़त क्या है।" वे थोड़ा सकपका गये थे, पर लहजा अब भी तुर्श था ।

"तो सुनिए सर, कहावत है- नेकी कर दरिया में डाल । हम भी नेकी को दरिया में डाल रहे थे । हमारे प्रिंसिपल तक यह नहीं जानते कि इस कॉलेज के बीस के लगभग बच्चों की पढ़ाई का खर्च कुछ स्टाफ़ सदस्य उठा रहे हैं और ऐसा करने वालों को हरामखोर बताया जा रहा है । आपने कक्षाओं को चेक किया । क्या कोई टीचर क्लास से ग़ायब मिला? रही बच्चों के इधर-उधर मैदान में आवारा घूमने की बात तो आप भी देख रहे हैं कि आधे से ज्यादा कक्षाओं को मैदान में लगाना पड़ रहा है क्योंकि कमरे नहीं हैं । कॉमन रूम नहीं होगा तो बच्चे कहाँ घूमेंगे? आपने खेल की बात की तो खेल सुबह शाम होते हैं, यह खेल का समय नहीं है।"

वे अब पश्चाताप में डूब गए थे । उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया, कंधे पर हाथ रखा और कहा, "तुमने बहुत अच्छा किया नौजवान वरना मैं इस कॉलेज के बारे में बुरी राय बना कर जाता ।"

**यह घटना मुझे तब अचानक याद हो आई, जब मुझे पता चला कि सिरसा की अतिरिक्त उपायुक्त द्वारा शिक्षा विभाग के अधिकारियों, प्राध्यापकों, अध्यापकों के साथ असहनीय व्यवहार किया गया । क्या एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जो अपमान का प्रतिरोध करता? बेईमान शिक्षक को आप कोई भी सज़ा दें, आपत्ति नहीं, पर सबको एक ही लाठी से हाँके जाने का विरोध अनिवार्य है । सभी शिक्षकों को इस प्रशासकीय अहंकार का एकजुट होकर मुंहतोड़ जवाब देना चाहिए । आत्मसम्मान ही अगर नहीं बचा तो फिर कोई व्यक्ति चाकर हो सकता है, शिक्षक क़तई नहीं । अगर आप सच के साथ हैं तो डर कैसा।**

**- हरभगवान चावला**

# गुजरात की भीड़ से भागते यूपी बिहार के लोग, यूपी बिहार की भीड़ से कहाँ-कहाँ भागे लोग???

**गु**जरात में चौदह महीने की एक बच्ची के साथ बलात्कार की घटना ने एक नई परिस्थिति पैदा कर दी है। बच्ची जिस समाज की है उसके कुछ लोगों ने इसे अपने समाज की शान भर देखा है। वे सामूहिक रूप से उग्र हो गए हैं। कह सकते हैं कि इस समाज के भीतर भीड़ बनने के तैयार लोगों को मौक़ा मिल गया है। इसलिए ठाकोर लोगों ने इसमें शामिल आरोपियों की सामाजिक पृष्ठभूमि के सभी लोगों को बलात्कार में शामिल समझ लिया है। इसमें उनकी ग़लती नहीं है। हाल के दिनों में बलात्कार को राजनीतिक रूप देने के लिए धार्मिक पृष्ठभूमि को उभारा गया ताकि उसके बहाने एक समुदाय पर टूट पड़ें। आरोपी मुसलमान है तो हंगामा लेकिन आरोपी हिन्दू है और पीडित दलित तो चुप्पी। पीडिता के साथ हुई क्रूरता के बहाने धार्मिक गोलबंदी का मौक़ा बनाया जा रहा है। यही काम जाति के स्तर पर भी हो रहा है।

**हालाँकि गुजरात के सभी दलों ने इस घटना की निंदा की है । ठाकोर समाज के नेता अल्पेश ठाकोर ने भी निंदा की है और अपील की है। वहाँ की सरकार ने भी उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश के लोगों को भगाने की घटना की भी निंदा की है। गुजरात पुलिस इस मामले में सक्रिय है। धमकाने वाले तीन सौ से अधिक लोगों को गिरफ़्तार किया है। ठाकोर समाज के लोगों ने भाजपा का विरोध किया था। अगर बलात्कार का मामला धार्मिक रंग ले लेता तब देखते कि गुजरात पुलिस क्या करती। कुछ नहीं करती। फिर भी इस मामले में पुलिस ने सख़्ती बरती है। चीफ़ सेक्रेट्री और पुलिस प्रमुख ने सक्रियता दिखाई है। इसलिए इस मामले में दोनों तरफ़ के समाज को समझाने की ज़रूरत है। क़ानून का भरोसा देने के लिए और बलात्कार के ख़िलाफ़ समाज को जागरूक बनाने के लिए काम करना होगा।**

इन सबके बीच जिन लोगों को अहमदाबाद की बसों में लदा कर तीस तीस घंटे की असहनीय यात्रा पर निकलना पड़ा है, उनकी यह पीड़ा पूरे देश को शर्मसार करे। यह कितना दुखद है। यूपी बिहार के लोगों ने इस मुल्क को सस्ता और उम्दा श्रम देकर सँवारा है। हर बात पर उन्हें हाँक देना ठीक नहीं है। इसी गुजरात से 2014 में बसों में भरकर ये लोग यूपी बिहार के गाँवों में भेजे गए थे ताकि वे नरेंद्र मोदी का प्रचार कर सके। गुजरात मॉडल का झूठा सपना बाँट सकें। मजबूरी में मज़दूर क्या करता। चला गया और प्रचार का काम कर आया।

इन लोगों के साथ गुजरात के शहरों और देहातों में मारपीट की घटना सामने आई है। मकान मालिकों ने धमकाया है कि राज्य छोड़ दो। इतनी असहनशीलता ठीक नहीं है। गुजरात बनाम यूपी बिहार नहीं होना चाहिए। नेताओं ने आपको बाँट दिया है। अब आप उसके लिए मात्र माँस की बेटी रह गए हैं। बड़े नेताओं की शक्ल देखकर छोटे स्तर पर भी नेता बनने के लिए लोग यही फ़ार्मूला आज़मा रहे हैं। ऐसे लोगों ने गुजरात में और बिहार में कहीं भी पनपने न दें। हम हर समय एक अन्य की तलाश में है। पहले धर्म के आधार पर एक अन्य तय करते हैं फिर जाति के नाम पर फिर भाषा के नाम पर।

**ऐसा नहीं है कि यूपी बिहार में भीड़ नहीं है। बिहार के सुपौल में गुंडों ने अपने माँ बाप और रिश्तेदार के साथ मिलकर लड़कियों के हॉस्टल पर हमला कर दिया। पैंतीस लड़कियाँ घायल हैं। इन लड़कियों ने रोज़ाना की छेड़खानी का विरोध किया था। बारह से सोलह साल की लड़कियों पर पूरा समाज टूट पड़ा। बिहार के मुज़फ़्फ़रपुर में एक बालिका गृह में क़रीब चालीस लड़कियों का शोषण हुआ वहाँ के समाज में कोई हलचल नहीं हुई। उस समाज को अब सिर्फ रामनवमी और मोहर्रम के दिनों में तलवार लेकर दौड़ने आता है। बाक़ी जो नहीं दौड़ रहे हैं वो घर बैठकर सही ठहराने के कारण खोज कर मस्त हैं।**

बिहार और यूपी में पिछले दिनों धार्मिक आधार पर जो भीड़ बनकर पागलों की तरह घूम रही है वो नई नहीं है। बस नया यह है कि पहले से ज़्यादा संगठित है। त्योहारों और जानवरों के हिसाब से उसके कार्यक्रम तय हैं। भीड़ के दुश्मन तय है और इस भीड़ के कार्यक्रम से किसे लाभ होगा वह भी। सोशल मीडिया पर भीड़ बनाने की फ़ैक्ट्री है। यह भीड़ हमें असुरक्षित कर रही है। हम ख़ुद को इस भीड़ के हवाले कर रहे हैं और भीड़ के नाम पर समाज और सरकार में गुंडे पैदा करने लगे हैं। बेशक आक्रोश की बात है लेकिन सजा कैसे मिले, सिस्टम कैसे काम करे इस पर फ़ोकस होना चाहिए। जो लोग शामिल थे उनके साथ नरमी न हो मगर बाक़ियों को क़सूरवार क्यों समझा जाए। यह मानसिकता कहाँ से आती है? इसकी ट्रेनिंग सांप्रदायिक राजनीति से मिलती है। हम खंडित होते जा रहे हैं। गोलबंदी के लिए हिंसा एकमात्र मक़सद रह गई है। किसी को मारना हो तो पागलों की भीड़ जमा हो जाती है। बाक़ी किसी काम के लिए चार लोग नहीं मिलते।

**नोट- बहुतों को यह लेख आसानी से समझ नहीं आएगा। इसलिए बिना पढ़ें कमेंट बाक्स में कुछ भी टिप्पणी करेंगे। आप दस मिनट बाद सारे कमेंट पढ़ लीजिएगा। गंधों को आप घोड़ा नहीं बना सकते लेकिन आज की राजनीति ने साबित कर दिया है कि घोड़े को गधा बनाया जा सकता है। - रवीश कुमार**

# पूरे देश में विघटनकारी राजनीति हावी

**सोशल मीडिया की हर खबर को संदेह की दृष्टि से देखने के कारण मुझे गुजरात में यू.पी./बिहार के लोगों के विरुद्ध हो रही हिंसा के वायरल वीडियो पर यकीन नहीं है।**

**पर तमाम समाचार पत्रों और गुजरात निवासी मित्रों से जो जानकारी छन कर बाहर आ रही है, उससे इतना तो तय है कि प्रांतवाद का ज़हर घाव बनकर रिस रहा है। इस देश का मानस जाति, धर्म, संप्रदाय, प्रांत.... आदि अस्मिताओं से इसकदर जुड़ा है कि मनुष्य पीछे छूट जाता है। कभी मैंने जब ये लिखा था कि राष्ट्रवाद भी अंततः छुद्र विचार ही है, तो मित्रों ने जमकर प्रतिवाद किया था। पूरे देश में विघटनकारी राजनीति हावी है। कभी असम से हिंदी भाषी और बंगाली भगाए जाते हैं, कभी महाराष्ट्र से बिहारी, कभी बंगलौर से नार्थ-ईस्ट के छात्र तो कभी यूपी से कश्मीरी। कभी कर्नाटक में तमिल विरोध की आग फैल जाती है तो कभी हिंदी विरोध। तमिलनाडु का हिंदी प्रेम तो जगजाहिर है ही। एक राष्ट्र के रूप में हम निरंतर विफल होते जा रहे हैं, मनुष्य के रूप में तो हैं ही। गुजरात की ताजा घटनाओं की सख्त भर्त्सना करता हूँ और इसे देश विरोधी कार्रवाई मानता हूँ। अगली बार जब किसी नेता को "जय महाराष्ट्र","जय गुजरात"..... या किसी और प्रांत का जयघोष करते सुनें, तो उससे पूछने की हिम्मत भले ही न कर पाएं, पर अपने आप से अवश्य पूछना कि "जय हिंद" से काम नहीं चल सकता क्या?**

**- डॉक्टर परितोष मालवीय**